
जो क्रूस पे कुर्बान है

जो क्रूस पे कुर्बान है, वो मेरा मसीह है
हर ज़ख्म जो उसका है, वो मेरे गुनाह का है

इस दुनिया में ले आये, मेरे ही गुनाह उसको
ये जुलुम-ओ-सिथम उसपर मैंने ही कराये है

इंसान है वो कामिल, और सच्चा खुदा वो है
वो प्यार का दरिया है, सचाई का रास्ता है

देने को मुझे जीवन, खुद मौत सही उसने
क्या खूब है कुरबानी, क्या प्यार अनोखा है